Toppersnotes®
Unleash the topper in you

हरियाणा

P.G.T.

हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)

भाग - 3

स्नातकोत्तर स्तर

SIERRA INNOVATIONS

स्नातकोत्तर स्तर

1.	काव्य हेतु	1
2.	काव्य लक्षण	7
3.	काव्य प्रयोजन	14
4.	साधारणीकरण	20
5.	ध्वनि सिद्धांत	25
6.	वक्रोक्ति सिद्धांत	32
7.	अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत	38
8.	लोंजाइनस का उदातत्तवाद	43
9.	मनोविश्लेषणवाद	47
10.	कबीर ग्रंथावली	52
11.	रामचरित मानस (तुलसीदास)	55
12.	बिहारी रत्नाकार	64
13.	साकेत	72
14.	निबंध	
	• कविता क्या है	106
	• शिरीष के फूल	114
15.	हानियाँ	
	• कफन (प्रेमचंद)	118

	• पुरस्कार (जयशंकर प्रसाद)	124
	• यही सच है (मन्नूं भण्डारी)	132
17.	हिन्दी भाषा	146

काव्य हेतु

काव्य हेतु से तात्पर्य – काव्य की उत्पत्ति का कारण

- काव्य हेतु का अभिप्राय काव्य की रचना के लिए आवश्यक कारणों से हैं अर्थात् काव्य के सृजन के लिए किन तत्त्वों का होना जरूरी हैं।

बाबू गुलाबराय :– हेतु का अभिप्राय उन साधनों से हैं जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।
काव्य हेतुओं का सर्वप्रथम विवेचन/विचार अग्निपुराण में किया गया हैं।

अग्निपुरा में तीन काव्य हेतु माने गए हैं।

(1) प्रतिभा
(2) वेदज्ञान
(3) लोक व्यवहार

अग्निपुराण

नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुलर्भ तत्र, शक्ति स्तत्र सुदुर्लभा।।

भावार्थ :– इस संसार में सर्वप्रथम तो मनुष्य जीवन प्राप्त करना ही दुर्लभ हैं, मनुष्य जीवन प्राप्त होने के बाद विद्या प्राप्त करना दुर्लभ हैं, विद्या प्राप्त करने के बाद कवित्व शक्ति दुर्लभ हैं, क्योंकि यह एकमात्र ईश्वर प्रदत्त शक्ति प्रतिभा द्वारा ही किया जा सकता हैं।
भारतीय विद्वानों के द्वारा काव्य लेखन के प्रमुखत तीन हेतु स्वीकार किये गये हैं।

(1) प्रतिभा (जन्मजात शक्ति/बुद्धि)
(2) व्युत्पत्ति (निर्मल शास्त्र ज्ञान)
(3) अभ्यास (बार–बार का दोहराव)

- आचार्य **भामह** के द्वारा अपनी काव्यालंकार रचना में एकमात्र **प्रतिभा** को ही काव्य हेतु के रूप में माना हैं।

"गुरूदेशादध्येतुं शास्त्रम जड़धियोडप्यलम्।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचित प्रतिभावतः।।"

भावार्थ :– गुरू के द्वारा पढ़ाये जाने पर तो मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी शास्त्रों को पढ़ सकता हैं परन्तु काव्य रचना तो किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति द्वारा की जा सकती हैं।

वामन **"काव्यालंकार" सूत्रवृति ग्रंथ**

- वामन ने काव्य को काव्यांग कहा तथा काव्य हेतु की संख्या तीन मानी हैं।

"लोको विद्याप्रकीर्णस्य काव्यांगानि।"

(अर्थात् लोक, विद्या, प्रकीर्ण तीन काव्य हेतु माने)

नोट :– वामन ने प्रतिभा को "कवित्व का बीज" माना हैं।

दण्डी :– ''काव्यादर्श'' ग्रंथ में

नैसर्गिकी प्रतिभा च श्रुत च बहुनिर्मलम्।
आन्नदश्चाभियोगोडस्याः कारणं काव्य संपद।।

आचार्य **दण्डी** ने काव्य रूपी संपत्ति के **प्रमुख तीन हेतु** स्वीकार किये हैं।

(1) नैसर्गिकी प्रतिभा (जन्मजात शक्ति)
(2) शास्त्रों का अध्ययन (व्युत्पत्ति)
(3) आन्नदपूर्वक अभियोग (अभ्यास)

रूद्रट :– काव्य हेतु के तीन भेद माने हैं।

(1) प्रतिभा (मुख्य) – सहज उत्पाद्य
(2) व्युत्पत्ति
(3) अभ्यास

मम्मट :– ''काव्य प्रकाश'' ग्रंथ

''शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रम काव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञ शिक्षायाभ्यास इति हेतुस्त दुद् भवे।।''

- आचार्य **मम्मट** ने प्रमुखत ''**तीन काव्य हेतु**'' स्वीकार किये हैं।
  (1) शक्ति (प्रतिभा)
  (2) निपुणता (व्युत्पत्ति)
    (i) लौकिक निपुणता (सांसारिक अनुभव से प्राप्त ज्ञान)
    (ii) शास्त्रीय निपुणता (शास्त्रो के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान)
  (3) अभ्यास

पीयूष वर्ष जयदेव ने काव्य एवं काव्य हेतुओं को निम्न रूपक के रूप में स्वीकार किया हैं।

(1) काव्य – वृक्ष
(2) प्रतिभा – बीज
(3) व्युत्पत्ति – मृदा
(4) अभ्यास – पानी

राजशेखर :– ''काव्य मिमांसा'' ग्रंथ में

''प्रतिभा व्युत्पत्ति मिश्रः समवेते श्रेयस्यौ इति।''

- इन्होंने शक्ति (प्रतिभा) व्युत्पत्ति को काव्य हेतु का कारण माना
- **राजशेखर ने प्रतिभा के दो भेद बताये हैं।**

प्रतिभा

- (1) कारयित्रि (कवि से संबंधित)
  - सहसा (जन्मजात) → सारस्वत कवि
  - आहार्य (अभ्यास) → आभ्यासिक कवि
  - औपदेशिकी (गुरूशास्त्र आदि) → औपदेशिक कवि
- (2) भावयित्रि (सहृदय से संबंध)
  - आरोचकी (आलोचक से संबधित)
  - सातृष्णाभ्यहारी (सामाजिक श्रोता)

जगन्नाथ :– रस गंगाधर ग्रंथ

"तस्य च कारणम् कविगतां केवला प्रतिभा।"

- इसने केवल **प्रतिभा** को काव्य हेतु माना हैं।

प्रस्तोता आचार्य	**काव्य हेतु**
भामह	प्रतिभा
दण्डी	प्रतिभा, शास्त्र ज्ञान, अभ्यास
कुंतक, रूद्रट	प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास
वामन	लोक, विद्या, प्रकीर्ण
जयदेव	प्रतिभा (मूल) अभ्यास (सहायक)
मम्मट	शक्ति, निपुणता, अभ्यास
हेमचन्द्र	प्रतिभा
जगन्नाथ	प्रतिभा
केशव मिश्र	प्रतिभा
राजेशेखर	प्रतिभा, व्युत्पत्ति
जयदेव	प्रतिभा, व्युत्पत्ति, अभ्यास

हिन्दी विद्वानों के अनुसार काव्य हेतु

आचार्य श्री पति :– "काव्य सरोज" ग्रंथ

शक्ति, निपुणता, लोकमत, विपत्ति अरू अभ्यास।
अरू प्रतिभा ते होत हैं ताको ललित प्रकाश।।

- आचार्य श्री पति ने कुल 06 काव्य हेतु स्वीकार किये हैं –

(1) शक्ति
(2) निपुणता
(3) लोकमत
(4) व्युत्पत्ति
(5) अभ्यास
(6) प्रतिभा

अन्य लक्षण श्री पति :–

शक्ति सुपुन्य बिसेख हैं जा बिन कवित न होय
जे कोऊ हठ सो रचै, हँसी करै कति तोय।।"
(इन्होंने शक्ति को सुपुण्य विशेष कहा हैं)

सुखदेव मिश्र :–

कारण देव प्रसाद जिहि, शक्ति कहत सब कोई।
व्युत्पत्ति अरू अभ्यास मिलि, त्रय बिनु काव्य न होय।।

- आचार्य सुखदेव मिश्र ने तीन काव्य हेतु माने हैं।

(i) शक्ति (प्रतिभा)
(ii) व्युत्पत्ति
(iii) अभ्यास

प्रस्तोता हिन्दी आचार्य		काव्य हेतु
(1) कुलपति मिश्र	–	(3) (i) प्रतिभा (शक्ति), (ii) व्युत्पत्ति, (iii) अभ्यास
(2) भिखारी दास	–	(3) (i) प्रतिभा, (ii) लोकानुभव (iii) काव्य अध्ययन
(3) महादेवी वर्मा, सुमित्रानंद पंत	–	(2) (i) प्रतिभा, (ii) अभ्यास
(4) रामचन्द्र शुक्ल, महावीर प्रसाद द्विवेदी, डा. नगेन्द्र	–	(3) (i) प्रतिभा, (ii) व्युत्पत्ति, (iii) अभ्यास

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार काव्य हेतु

विद्वान	हेतु संख्या	हेतु नाम
(1) युंग	01	कवि हृदय में स्थित प्रभुत्व कामना
(2) लोजांइनस	01	प्रतिभा शक्ति को ही प्रकृति कहा हैं।
(3) प्लेटो	01	मानसिक विक्षिप्तता
(4) एडलर	01	मन के अभाव या हीन भावना
(5) फ्रायड	02	(i) दमित कामना (ii) अतृप्त वासना
(6) अरस्तु	03	(i) अनुकरण (ii) सामंजस्य (iii) लय
(7) विलियम हड्सन	04	(i) आत्माभिव्यंजना की इच्छा (ii) मनुष्यों एवं उसके कार्यों के प्रति अनुराग (iii) काल्पनिक जगत के प्रति अनुराग (iv) सौंदर्यानुभूति

निष्कर्ष :– उपर्युक्त सभी विद्वानों के विश्लेषण के आधार पर वर्तमान में निम्नलिखित 03 काव्य हेतु ही स्वीकार किये जाते हैं।

(1) प्रतिभा
(2) व्युत्पत्ति
(3) अभ्यास

1. प्रतिभा :– प्रतिभा का शाब्दिक अर्थ – प्रकाश

- प्रतिभा वह साधन हैं जिसके कारण काव्योपयोगी विभिन्न तत्त्वों का प्रकाश हो।
- प्रतिभा का काव्य हेतुओं मे सर्वोपरि स्थान हैं। यह नित्य नवीन उद्भावना करने वाली मानसिक शक्ति हैं। रचनात्मक कार्य करने की असाधारण योग्यता या स्मृति, मेधा, मति, प्रज्ञा तथा विवेक से युक्त मानसिक शक्ति को प्रतिभा कहते हैं।
- प्रतिभा का महत्त्वपूर्ण कार्य चित्र विधान या बिम्ब विधान करना हैं।

परिभाषाएँ :–

आचार्य वामन :–

''कवित्व बीजं प्रतिभानम् कवित्वस्य बीजम्।''
(कवित्व बीज को ही प्रतिभा कहा जाता हैं)

राजशेखर :–

''सा शक्ति केवला शक्ति काव्यं हेतु''
(स्मृति, मति, प्रज्ञा, बुद्धि के तीन प्रकार माने हैं)

भट्टतोत, वाग्भट्ट, हेमचन्द — **''नित्यं नवनवोन्मेष शालिनी प्रज्ञा प्रतिभा''**
(ऐसी बुद्धि जो हमे नित्य कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती हैं उसे प्रतिभा कहते हैं)

मम्मट :– शक्ति कवित्व बीजं रूपः संस्कार विशेषः।

भावार्थ :– ऐसी शक्ति जो हमारे मन में कवित्व का बीज बोती हैं।

अभिनव गुप्त :– ''प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माण क्षमा प्रभा''

भावार्थ :– ऐसी बुद्धि जो हमे किसी विशिष्ट वस्तुओं का निर्माण करने की क्षमता प्रदान करती हैं।

जयदेव :– **प्रतिभैव श्रुताभ्यास संहिता कविताम् प्रति।**
हेतुर्मृदम्बु संबंध बीजोत्पत्तिर्ल तामिव।।

भावार्थ :– ज्ञान और अभ्यास प्रतिभा रूपि बीज को अंकुरित करने के लिए मिट्टी और जल के तुल्य हैं। अतः प्रमुख कारण प्रतिभा हैं।

महिम भट्ट :– प्रतिभा कवि का तृतीय चक्षु हैं।

रामचन्द्र शुक्ल :– प्रतिभा अन्तः करण की उद्भावित किया हैं।

डा. नगेन्द्र :– प्रतिभा असाधारण कोटि की मेधा हैं।

नंद दुलारे वाजपेयी :– काव्य की प्रेरणा अनुभूति से मिलती हैं।

यह अनुभूति स्वतः एक अनुभूत तथ्य हैं।

निष्कर्ष :– प्रतिभा काव्य का मूल हेतु हैं तथा यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति हैं।

2. व्युत्पत्ति – व्युत्पत्ति का शाब्दिक अर्थ :– ज्ञान, निपुणता, बहुज्ञता शास्त्रों में वर्णित तथा लोक जीवन में परस्पर व्यवहार करने से जो ज्ञान प्राप्त होता हैं, उसे व्युत्पत्ति कहते हैं।

- व्युत्पत्ति में 'शास्त्रीय ज्ञान' तथा 'लौकिक ज्ञान' दोनों का समावेश होता हैं। इसी कारण व्युत्पत्ति के दो भेद माने गए हैं।
  (1) शास्त्रीय व्युत्पत्ति – शास्त्रों के अध्ययन से संबंधित हैं।
  (2) लौकिक व्युत्पत्ति – लोक–ज्ञान से संबंधित हैं।
- **आचार्य वामन** – विद्या परिज्ञान को ही व्युत्पत्ति कहा जाता हैं।

राजशेखर :– "उचिता नुचितौ विवेकौ व्युत्पत्ति।"

(इन्होंने उचित व अनुचित के विवेक को ही व्युत्पत्ति कहा हैं।)

- आचार्य दण्डी ने व्युत्पत्ति के लिए "निर्मल प्रतिभा" शब्द का प्रयोग किया हैं।
- रूद्रट ने छंद, व्याकरण, कला, पद व पदार्थ के उचित अनुचित के सम्यक ज्ञान को व्युत्पत्ति कहा हैं।

3. अभ्यास – अभ्यास का शाब्दिक अर्थ – लगातार प्रयास करना।

"अनारवं गुरूवान्ते य काव्य रचनादरः।"

(बहुत समय तक गुरू के समीप रहकर काव्य रचना करते रहना ही अभ्यास हैं)

- भामह ने अभ्यास के लिए यत्न शब्द का प्रयोग किया हैं।
- दण्डी अभ्यास को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं, उनके अनुसार प्रतिभा निःसंदेह एक आवश्यक वस्तु हैं परन्तु इसके अभाव में भी श्रुत (शास्त्रीय ज्ञान) और यत्न के द्वारा उपासित सरस्वती किसी–किसी पर अनुग्रह कर ही देती हैं।
- अभ्यास के लिए 'एक निष्ट श्रम की बात' आचार्य दण्डी ने की हैं।

कवि वृन्द के अनुसार :–

करत–करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान।
रसरी आवत–जावत सिल पर पड़त निशान।।

वामन :– **"अभ्यासो ही कर्मसु कौशलम भावहिति।"**

(अभ्यास से ही कवि कर्म में कुशलता को प्राप्त करता हैं)

राजशेखर :– निरन्तर प्रयास करते रहना ही अभ्यास हैं।

- मंगल नामक आचार्य ने अभ्यास को ही काव्य का प्रधान हेतु माना हैं। मंगल का उल्लेख राजशेखर कृत काव्य मिमांसा में मिलता हैं।
- अमीर खुसरो ने भी अभ्यास को महत्त्व दिया हैं।

पान सड़ा क्यो ? घोड़ा अड़ा क्यो ?

निष्कर्ष :– अभ्यास की प्रक्रिया एक प्रकार की साधना हैं जिसके कारण काव्य की अनगढ़ता सुडौल और सुगठित बनती हैं। 'अभ्यास' नामक काव्य हेतु प्रतिभा और व्युत्पत्ति के अन्तराल में प्रवाहित एक ऐसा निर्झर हैं जो समय–समय पर काव्य कौशल में ऊर्जा का संचार करता हैं। और आवश्यकता पड़ने पर रचनाकार को नई–नई दिशाएँ भी सुझाता हैं।

विशेष बातें :– रामधारी सिंह 'दिनकर' 'प्रतिभा' को अनिर्वचनीय शक्ति मानते हैं।

- महादेवी वर्मा प्रतिभा और व्युत्पत्ति को काव्य हेतु माना हैं 'अभ्यास' को नहीं।
- डॉ. नगेन्द्र ने चेतना के लिए **'प्रतिभा'** शब्द का प्रयोग किया हैं।
- युंग ने जीवनेच्छा को मुख्य काव्य हेतु माना हैं।

काव्य लक्षण

काव्य की परिभाषा ही काव्य लक्षण हैं।

- सर्वप्रथम काव्य–लक्षणों की चर्चा "अग्निपुराण" में मिलती हैं जहाँ संक्षेप में इष्ट अर्थ को प्राप्त करनें वाला वाक्य काव्य बताया गया हैं।
  - काव्य लक्षण को "काव्य स्वरूप विमर्श" भी कहा जाता है।
  - काव्य लक्षण के विषय में प्रारम्भिक चिंतन संस्कृत के आचार्यों का रहा हैं।
  - काव्य मानव जीवन की असफलता व निराशा की दशा में आशा का संचार करता हैं तथा वैयक्तिक सुख दुखो को साधारणीकरण द्वारा सामाजिक सुख–दुःख बना देना काव्य की ही विशेषता हैं।

काव्य लक्षण विविध विद्वानों के अनुसार

अग्निपुराण (वेदव्यास)

संक्षेपाद्वकाव्यामिष्टार्थ व्यवच्छिना पदावली।
काव्य स्फुरदलंकार गुणवद्दोषर्जितम् ।।

भावार्थ – सक्षेप में इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली से युक्त ऐसा वाक्य काव्य है, जिसमें अलंकार प्रकट हो और जो दोष रहित और गुण युक्त हो। इसमें इष्टार्थ, संक्षिप्त वाक्य, अलंकार, गुण, दोष से काव्य की बाहय रूप रेखा स्पष्ट हो जाती है।

मृदु ललित पद पाठ्यं गूढं शब्दार्थहीनम्,
जनपद सुख बोध्यम् युक्तिमन्नृत्ययोज्यम्।
बहुकृतरसमार्ग संधि सन्धान युक्तमं,
स भवति शुभकाव्यं नाटकं प्रेक्षकाणाम्।। **("भरतमुनि" नाट्यशास्त्रं)**

भरतमुनि ने शुभ काव्य के सात तत्त्व माने हैं –

(1) जिसकी रचना कोमल व ललित शब्दों में हो।
(2) शब्द व अर्थ में जटिलता ना हो।
(3) जनसाधारण आसानी से समझ सकें।
(4) तर्क युक्त।
(5) नृत्य की योजना हो।
(6) भिन्न–भिन्न प्रकार के रस स्वीकार किए जा सकते हो।
(7) संधि योजना युक्त हो।

भामह – 6 वीं शताब्दी "काव्यालंकार"
"शब्दार्थों सहितम् काव्यम्"
(शब्द व अर्थ सहित भाव काव्य कहलाता हैं।)

अर्थात् – शब्दार्थोंसहितौ काव्यं गद्य–पद्य च द्विधा।
संस्कृतप्राकृत चान्यदपभ्रंशः इति त्रिधा।।

शब्द एवं अर्थ को ही काव्य कहा जाता है। लेखन स्वरूप के आधार पर यह काव्य दो प्रकार का होता हैं –

(1) गद्य काव्य (छन्द के नियमों से रहित काव्य)
(2) पद्य काव्य (छन्द के नियमों से युक्त काव्य)

भाषा के आधार पर भामह ने काव्य के तीन भेद माने हैं –
(1) संस्कृत भाषा का काव्य
(2) प्राकृत भाषा का काव्य
(3) अपभ्रंश भाषा का काव्य

दण्डी – 7 वीं शताब्दी "काव्यादर्श ग्रंथ में"
"शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिनापदावली"
(इष्ट अर्थ को प्रकट करने वाली पदावली तो काव्य का शरीर मात्र हैं।)

नोट – दण्डी अलंकार युक्त शब्दार्थ को काव्य मानते हैं।

वामन – 8 वीं शताब्दी काव्यालंकार सूत्रवृत्ति ग्रंथ में –
"दोष रहित वाक्य काव्यम्"
(दोष रहित वाक्य ही काव्य हैं।)

वामन का अन्य वक्तव्य
"काव्य शब्दोऽयं गुणालंकार संस्कृतोः शब्दार्थयोः वर्तते।"
सभी प्रकार के गुणों एवं अलंकारों से युक्त शब्दार्थ ही काव्य कहलाता हैं।

आनन्दवर्धन – 9 वीं शताब्दी "ध्वन्यालोक" ग्रंथ में –
"सहृदयहृदयाह्लादिशब्दार्थ मयत्वमेव काव्य लक्षणम्"

कुंतक – 10–11 वीं शताब्दी (वक्रोक्ति जीविकतम् ग्रंथ)
"शब्दार्थौं सहितो वक्र कवि व्यापारशालिनौ।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणौ।।"
(आनन्ददायक, कवि व्यापार से सुंदर रचना को व्यवस्थित शब्द और अर्थ को काव्य कहते हैं।)

हेमचन्द्र – "अदोषौ सगुणों सालंकारो व शब्दार्थौं काव्यम्।"
(दोष रहित, गुण, अलंकार युक्त रचना काव्य हैं।)

मम्मट – 11 वीं शताब्दी "काव्यप्रकाश" ग्रंथ में
"तददोषौ शब्दार्थौं सगुणावलंकृति पुनः क्वापि च।।"
(दोष रहित और गुण तथा अलंकार सहित शब्दार्थ का नाम काव्य हैं। कभी–कभी अलंकारों से रहित वाक्य भी काव्य हो सकता है।)

नोट – आचार्य मम्मट ने अपने इस काव्य लक्षण में काव्य के तीन लक्षण बताये है, जिनमें दो लक्षण अनिवार्य व एक लक्षण इच्छित माना हैं।
(1) अदोषौ (दोष रहित शब्द) } अनिवार्य
(2) सगुणौ (गुणों से युक्त शब्द) } अनिवार्य
(3) अलंकारो का प्रयोग/अलंकारो से रहित शब्द → इच्छित

ध्यान दें – आचार्य मम्मट के इस काव्य लक्षण में शब्दार्थों पद, विशेष्य पद माना जाता है तथा शेष तीनों लक्षण विशेषण पद माने जाते हैं।

वाग्भट – 12 वीं शताब्दी "वाग्भटालंकार"

"गुणालंकाररीतिरससोपतेः शाधु शब्दार्थ संदर्भः काव्यम्।"

(काव्यगुण, अलंकार रीति, रस से युक्त, दोष रहित साधु शब्दार्थों का समूह है।)

जयदेव – 13 वीं शताब्दी "चन्द्रालोक ग्रंथ"

"निर्दोष गुणालंकार लक्षण रीति वृत्तिमत वाक्यं काव्यम्।"

(दोष रहित, गुण, अलंकार, लक्षण, रीति, रस, वृत्ति से पूर्ण वाणी काव्य हैं।)

विद्याधर – 14 वीं शताब्दी "एकावली ग्रंथ"

"शब्दार्थों वपुरस्य शब्दार्थवपुस्तावत् काव्यम्।।"

अन्यत्र परिभाषा – जयदेव

"निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुण भूषणा।
सालंकार रसानेक वृत्तिवाक्काव्यनामवाक।।"

ऐसी वाणी (वाक) जो सभी प्रकार के दोषों से रहित व शुभ लक्षणों से युक्त, तीनों रीतियों व तीनों गुणों से सुसज्जित होती हैं, इसमें अनेक अलंकारों व रसों का प्रयोग होता है तथा शब्द शक्तियों का समावेश भी होता हैं, उसे काव्य कहते हैं।

आचार्य विश्वनाथ – 14 वीं शताब्दी "साहित्य दर्पण ग्रंथ में"

"वाक्यं रसात्मक काव्यम्।" (स्कूल व्याख्याता परीक्षा)

(ऐसा वाक्य जिसकी आत्मा रस हैं, काव्य कहलाता हैं।)

नोट – आचार्य विश्वनाथ ने अपने इस काव्य लक्षण में एकमात्र रस को ही अथवा रसयुक्त वाक्य को ही वाक्य का अनिवार्य लक्षण माना हैं।

पण्डित जगन्नाथ – 17 वीं शताब्दी "रस गंगाधर ग्रंथ में"

"रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्"।

(किसी भी रमणीय (अत्यधिक सुंदर) अर्थ को प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य कहलाता हैं।)

रूद्रट – ''ननु शब्दार्थों काव्यम्''

(एक निश्चित शब्द एवं अर्थ ही काव्य कहलाता हैं।)

हिन्दी विद्वानों द्वारा प्रतिपादित काव्य लक्षण

तुलसीदास

कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरी सम सब कहै हित होई।।

(जिस प्रकार गंगा नदी सबका भला करती हैं, ठीक उसी प्रकार कविता भी सभी का भला करती हैं। साथ ही साथ वह कीर्ति में भी वृद्धि करती हैं।) **(कॉलेज व्याख्याता 2016)**

चिन्तामणि – (कविकल्पतरू ग्रंथ)

सगुण अलंकार सहित, दोष रहित जो होय।
शब्द अर्थ वारौ कवित, विबुध कहत सब कोई।।

(दोष रहित, गुण युक्त, अलंकार युक्त तथा अर्थ सहित वाक्य ही काव्य हैं।)

देव कवि

सब्द जीव तिहि अरथ मन, रसमय सुजस शरीर।
चलत वहै जुग छंद गति, अलंकार गंभीर ।।

(काव्य पुरुष में शब्द जीव हैं, अर्थ मन है, रस से युक्त यशस्वी उसका शरीर हैं। मात्रिक व वार्णिक छन्द उसकी गति हैं और अलंकार उस गति की गंभीरता है।)

कुलपति मिश्र

(1) **"दोष रहित अरु गुन सहित, कछुक अल्प अलंकार।**
सबद– अर्थ सो कबित हैं, ताकौ करो विचार।।"
(ऐसा शब्द या अर्थ जो सभी दोषों से रहित व सभी गुणों से युक्त हो, व कुछ अलंकार भी उसमें हो, वे अलंकार कहलाते हैं।)

(2) **"जग ते अद्‌भूत सुख सदन, सब्द अरू अर्थ कवित्त।**
यह छलन मैने कियो, समुझि ग्रंथ बहुत चित्त।।"
(संसार में विलक्षण आनन्द देनें वाला शब्दार्थ काव्य हैं। विलक्षण आनन्द कैसे समझा जाए। अतः लक्षण अस्पष्ट है।)

केशवदास –"कविप्रिया ग्रंथ"

यद्यपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सवृत।
भूषण बिना न विराजति, कविता बनिता मित।।

भिखारी दास

रस कविता को अंग भूषण है भूषण सकल।
गुन सरुप औ रंग दूषन करै कुरूपता।।

(कविता को कामिनी के तुल्य मानकर उसके लिए निर्धारित तत्त्वों की उपयुक्तता एवं अनुपयुक्तता पर विचार किया हैं।)

डॉ. नगेन्द्र – रसात्मक अनुभूति ही काव्य हैं।

सुमित्रानन्दन पंत – कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की अभिव्यक्ति/वाणी हैं।
नोट – पंत के अनुसार साहित्य जगत की सर्वप्रथम कविता किसी वियोगी नामक व्यक्ति द्वारा लिखी मानी जाती हैं।

वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा ज्ञान।
निकलकर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।

सुदामा प्रसाद पाण्डेय – "धूमिल"

कविता शब्दों की अदालत में खड़े किसी बेकसूर व्यक्ति का हलफनामा हैं।

प्रेमचन्द – काव्य जीवन की आलोचना हैं।

रामचन्द्र शुक्ल

1. जिस प्रकार आत्मा की मुक्तादशा ज्ञानदशा कहलाती हैं, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी हैं, उसे ही कविता कहते हैं। **(द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती)**

2. सत्वोद्रेक एवं हृदय की मुक्ति साधना के लिए किया गया शब्द विधान ही काव्य कहलाता हैं।
3. जीवन और जनता की अभिव्यक्ति ही कविता हैं।

जयशंकर प्रसाद

सत्य की अपने पूर्ण संदर्भ के साथ की गई अभिव्यक्ति ही कविता कहलाती हैं।
आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति ही कविता कहलाती हैं।

नंद दुलारे वाजपेयी

काव्य तो प्राकृत मानव अनुभूतियों का नैसर्गिक कल्पना के सहारे ऐसा सौंदर्यमय वर्णन है, जो मनुष्य मात्र में स्वभावतः भावोच्छवास और सौंदर्य संवेदन उत्पन्न करता हैं।

बाबू गुलाबराय

काव्य संसार के प्रति कवि की भाव प्रधान सामासिक प्रतिक्रियाओं के कल्पना के ढ़ाँचे में ढली हुई श्रेय को प्रेय देने वाली अभिव्यक्ति हैं।

श्याम सुंदर दास

काव्य वह हैं जो हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करें।

गणपति चन्द्र गुप्त

भाषा काव्य के माध्यम से रचित वह सौंदर्य या आकर्षण युक्त रचना हैं जिसके अर्थ बोध से सामान्य व्यक्ति को आनन्द की अनुभूति होती हैं।

अज्ञेय

कविता सबसे पहले व अन्त में शब्द हैं।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार काव्य लक्षण

ड्राइडन
कविता सुस्पष्ट संगीत हैं।
(Poetry is articulate music.)

कॉलरिज
कविता सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम हैं।
(Poetry is the best words in best order.)

वड्र्सवर्थ
कविता हमारे प्रबल भावों का सहज उच्छलन हैं।
“Poetry is the spontaneous overflow of powerful feelings.”

कार्लाइल
संगीतमय विचार ही कविता हैं।
“Poetry is the musical thought.”

मैथ्यू अर्नाल्ड
कविता मूलतः जीवन की आलोचना हैं।
(Poetry is at bottom, a criticism of life.)

पी. बी. शैली
कविता सुखद और उत्कृष्ट मस्तिष्क द्वारा सुखद और उत्कृष्ट क्षणों का संग्रह हैं।
(Poetry is the record of the best and happiest moments of the happiest and best mind.)

एडगर एलन पो
कविता सौंदर्य का लयात्मक सृजन हैं।
"Poetry is a rhythmic creation of beauty."
सारांश
उपर्युक्त सभी कथनों के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि एक कविता में प्रमुखतः तीन लक्षण प्राप्त होते हैं।
(1) माननीय अनुभूति
(2) भाषा द्वारा उसकी अभिव्यक्ति
(3) अभिव्यक्ति में कलात्मकता

काव्य शास्त्र से संबंधित रचनाएँ

क्र.सं.	आचार्य	समय	रचनाएँ
1.	भरतमुनि	3 वीं शताब्दी	नाट्यशास्त्र
2.	भामह	6 " "	काव्यालंकार
3.	दण्डी	7 " "	काव्यादर्श
4.	वामन	8 " "	काव्यालंकार सूत्रवृत्ति
5.	आनन्दवर्धन	9 " "	ध्वन्यालोक
6.	आचार्य उद्भट	9 " "	काव्यालंकार सार संग्रह
7.	राजशेखर	9 " "	काव्यमिमांसा
8.	रूद्रट	10 " "	काव्यालंकार सूत्र
9.	धनजय	10 " "	दशरूपक
10.	अभिनव गुप्त	10 " "	ध्वन्यालोक, अभिनव भारती
11.	कुंतक	10, 11वीं शताब्दी	वक्रोक्ति जीवितम्
		11 वीं शताब्दी	सौंदर्यामलंकार
12.	भोजराज	11 वीं शताब्दी	सरस्वती कण्ठाभरण
		13 " "	श्रृंगार प्रकाश
13.	आचार्य मम्मट	14 " "	काव्य प्रकाश
14.	जयदेव	15, 16 " "	गीत गोविंद
15.	विश्वनाथ	16, 17 " "	साहित्य दर्पण
16.	रूप गोस्वामी	17 वीं " "	उज्ज्वल नीलमणि
17.	अप्पय दीक्षित		कुवलयानंद
18.	जगन्नाथ		रस गंगाधर
19.	केशव मिश्र		अलंकार शेखर
20.	आचार्य वाग्भट		अलंकार तिलक
21.	महिम भट्ट		व्यक्ति विवेक

हिन्दी काव्य शास्त्रीय रचनाएँ

क्र.सं.	विद्वान	रचनाएँ
1.	रामचन्द्र तिवारी	– हिन्दी का गद्य साहित्य – आधुनिक हिन्दी आलोचना – भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना
2.	शिवदान सिंह	→ आलोचना सिद्धांत
3.	बच्चन सिंह	– आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द – आलोचक और आलोचना
4.	रामदहिन मिश्र	→ काव्य दर्पण
5.	रामचन्दग शुक्ल	रस मीमांसा चिन्तामणि
6.	श्यामसुंदर दास	→ साहित्यलोचन
7.	नगेन्द्र	– भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका – अरस्तु का काव्य शास्त्र – काव्य मे उदात्त तत्त्व – भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा

काव्य प्रयोजन

प्रयोजन का अर्थ – उद्देश्य होता हैं।

परिभाषा – रचना के उद्देश्य अर्थात् उससे प्राप्त होने वाले लाभ को काव्य प्रयोजन कहा जाता हैं।

- मानव के प्रायः सभी कार्य सप्रयोजन होते हैं, अन्तः काव्य लेखन का भी अपना कोई–न–कोई प्रयोजन अवश्य होता हैं।
- कुछ कवि 'आत्माभिव्यक्ति' की इच्छा से कार्य करते हैं, तो कुछ 'आत्मानुभूति' की इच्छा से। कुछ यश प्राप्ति के लिए काम करते हैं तो कुछ अर्थ प्राप्ति के लिए, तो कुछ लोक व्यवहार परिवर्तन के लिए, सभी का प्रयोजन अलग–अलग हैं।

आचार्य भरत मुनि – "दूसरी शताब्दी नाट्य शास्त्र" ग्रंथ में–

दुःखार्ताना श्रमार्त्ताना शोकार्त्ताना तपस्विनाम्।
विश्रामजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति।।

(मुनि जी ने दुःख, श्रम, शोक से पीड़ित तपस्वियों को संसार में सुख प्रदान करने वाला काव्य ही प्रयोजन हैं।)

नोट – भरतमुनि नें अन्यत्र जगह काव्य के 06 प्रयोजन माने हैं।

"धर्मम् यशस्यं आयुष्य हितं बुद्धिविवर्धनम्।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद् भविष्यति।।

(1) धर्म	(4) हित (कल्याण)
(2) यश	(5) बुद्धि का विकास
(3) आयु में वृद्धि	(6) लोगों को उपदेश देना

नोट – भरतमुनि द्वारा बताये 06 प्रयोजनों में यश की प्राप्ति तो कवि का प्रयोजन हैं, धर्म की प्राप्ति कवि व पाठक दोनों से संबंधित हैं जबकि बाकि चारों तत्त्वों का संबंध परोक्ष रूप से पाठक (सहृदय) के साथ होता हैं।

भामह (छठीं शताब्दी "काव्यांलकार" ग्रंथ में)

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्य कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिञ्च साधुकाव्य निबंधनम्।।

आचार्य भामह के द्वारा काव्य प्रयोजन के चार रूप माने हैं।

(1) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति (2) कलाओं में निपुणता
(3) यश (कीर्ति) की प्राप्ति (4) प्रीति आनन्द की प्राप्ति

नोट – यहाँ कीर्ति व अर्थ का संबंध कवि से हैं व शेष तत्त्वों का संबंध सहृदय (पाठक) से हैं।

वामन – "काव्यालंकार सूत्रवृत्ति" ग्रंथ में।

"काव्य सद्दृष्टादृष्टार्थ प्रीति कीर्तिहेतुत्वात्।"

भावार्थ – इन्होने काव्य का प्रयोजन दृष्ट (आनन्द/प्रीति) की प्राप्ति एवं अदृष्ट (कीर्ति/यश) की प्राप्ति को माना हैं।

कीर्ति / यश → कवि से संबंध
आनन्द / प्रीति → सहृदय / पाठक से संबंध

आनन्दवर्धन – 9 वीं शताब्दी (ध्वन्यालोक)
इन्होनें प्रीति / हृदयाह्लाद को काव्य का प्रयोजन माना हैं।

मम्मट – 11 वीं सदीं – "काव्यप्रकाश" ग्रंथ में (शिक्षक भर्ती RPSC Exam)
काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मित योपदेशयुजे।।

(मम्मट नें काव्य लेखन के 06 प्रयोजन माने हैं।)

(1) यश की प्राप्ति
(2) धन / अर्थ की प्राप्ति
(3) लोक व्यवहार का ज्ञान
(4) शिवेतरक्षतये (अमंगल का विनाश, लोकहित, कल्याण)
(5) सद्यः परिनिर्वृतये (आत्म शांति या आनन्दोपलब्धि)
(6) कान्ता समित उपदेश (धर्म पत्नी के समान उपदेश)

कवि / लेखक से संबंधित प्रयोजन – (1) यश प्राप्ति (2) अर्थ / धन प्राप्ति (3) अमंगल का विनाश
पाठक / सहृदय " " – (4) लोक व्यवहार का ज्ञान
(5) सद्य परिनिर्वृते – (तुरन्त आनन्दोपलब्धि / आत्मसंतुष्टि)
(6) पत्नी के समान उपदेश

(1) यश की प्राप्ति

यश की प्राप्ति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक आकांक्षा हैं। प्रभुत्व कामना, अहमन्यता मनुष्य की मूल प्रवृति हैं।

- काव्य लेखन से कवि को यश (कीर्ति) की प्राप्ति होती हैं तथा वह अमरत्व को प्राप्त होता हैं।
  जैसें –

तुलसीदास	रामचरितमानस	कबीर	बीजक
जयशंकर प्रसाद	कामायनी	केशवदास	रामचन्द्रिका
प्रेमचन्द	गोदान	धर्मवीर भारती	अंधायुग
जायसी	पद्मावत		

- जायसी नें पद्मावत काव्य के लेखन का उद्देश्य यश की प्राप्ति माना हैं। इस संबंध मे जायसी ने एक जगह लिखा हैं –

"ओ मन जानि कवित्त अस कीन्हा।
मकु यह रहे जगत मँह चीन्हा।।"

(2) अर्थ / धन की प्राप्ति

- इस प्रयोजन का संबंध कवि से माना जाता हैं अर्थात् काव्य लेखन से कवि को धन की प्राप्ति होती हैं।
- संस्कृत के कवि श्री हर्ष, कवि धावक, बाणभट्ट, रीतिकालीन कवि देव, भूषण, बिहारी, केशव का काव्य प्रयोजन अर्थ / धन प्राप्ति रहा है। कवि बिहारी को मिर्जा राजा जयसिंह द्वारा अच्छे दोहों की रचना करने के लिए स्वर्ण मुद्रा (अशर्फी) दी जाती थी। वर्तमान लेखकों का काव्य प्रयोजन भी कुछ हद तक इसी श्रेणी का माना जा सकता हैं। **(IInd ग्रेड शिक्षक भर्ती)**

(3) लोक व्यवहार का ज्ञान

- इस प्रयोजन का संबंध पाठक (सहृदय) से माना जाता हैं अर्थात् काव्य पठन के द्वारा पाठकों को व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति होती हैं।
- साहित्य जगत में निम्नलिखित रचनाएँ इसी प्रयोजन से लिखी हैं –